बापदादा के मधुर सन्देश के साथ दादी गुल्जार जी का क्लास

(मधुबन क्लास में यू.के. सेवा पर जाने की छुट्टी लेते समय)

आज अमृतवेले बापदादा से मिलन हुआ, तो बापदादा ने आप सभी को भी वतन में इमर्ज किया और सबको यही स्वमान याद दिलाते पूछा कि ''मेरे सन्तुष्टमणि बच्चे'' कैसे हैं? मैंने कहा बाबा सन्तुष्ट तो सभी हैं ही। सभी स्वयं को सन्तुष्ट करने का ही प्रयत्न कर रहे हैं। तो बाबा ने कहा कि बाबा को खुशी है कि बाप ने जो कहा है वह बच्चों ने किया है, इसी रफ्तार से मैजारिटी बच्चे चल रहे हैं। लेकिन सन्तुष्ट आत्मा की विशेषता है कि सदा खुद भी खुश रहे और साथी भी खुश रहें और जिसके प्रति कुछ किया उसमें भी सन्तुष्टता आवे। तो बाबा ने आज सन्तुष्टमणि के स्वमान की स्मृति दिलाई और कहा कि जब बाबा बच्चे शब्द कहता है तो एक एक बच्चा मेरे नयनों के सामने ऐसे आता है जैसे टी.वी. में सीन चलती रहती है, एक जाती है दूसरी आती है, ऐसे मेरे नयनों में एक एक रत्न आता जाता है। तो ऐसे बाबा ने यादप्यार दिया। फिर बाबा सबको एक हाल में ले चले जहाँ बहुत सुन्दर सफेद लाइट के चबूतरे बने हुए थे, बाबा ने कहा सभी एक एक चबूतरे पर बैठ जाओ तो सभी उस पर बैठने से खुद भी लाइट बन गये। फिर बाबा ने सभी के तीन रूप दिखाये – 1. ब्राह्मण 2. फरिश्ता और 3. देवता। ऐसे तीनों रूपों की बहुत सुन्दर सभा लग रही थी। बाबा ने कहा बच्चों को कहना कि इन तीनों रूपों के नशे में रहना है। अभी ब्राह्मण है फिर फरिश्ता सो देवता बनेंगे। तो सारे दिन में यह तीनों रूप इमर्ज रहें। फिर बाबा ने सभी को बहुत मीठी दृष्टि देते नयनों में समा लिया।

फिर कुमारियां जो ट्रेनिंग में आई हैं उनको भी विशेष याद किया और कहा कि यह तो 100 ब्राह्मणों से उत्तम कन्यायें हैं। हर कन्या को कम से कम 100 ब्राह्मण जरूर तैयार करने हैं। तो बाबा ने कहा इन्हों से पूछना कि एक एक कुमारी 100 वारिस तैयार करेंगी ना! जब ट्रेनिंग कर रही हो तो ट्रेनिंग का फल भी जरूर देंगी। तो पक्के 100 ब्राह्मण, वारिस क्वालिटी के तैयार करना, ढीले ढाले नहीं। फिर बाबा ने पूरे संगठन को याद किया और कहा कि सभी बच्चे मेरे नयनों में समाये हुए नूरे रत्न हैं।

आजकल बापदादा हम सब बच्चों को यही कहते हैं कि एक सेकेण्ड में अपने मन को जहाँ चाहो वहाँ टिका सको। मन की रफ्तार अपने कन्ट्रोल में रहे। जैसे योग में जब बैठते हो तो दूसरे सब विचार हटाकर पावरफुल योग करते हो। ऐसे ही समय प्रमाण अब मन की गति को अपने कन्ट्रोल में रखो क्योंकि फाइनल पेपर अचानक होना है इसलिए अपने मन की डोर एकदम अपने हाथ में होनी चाहिए। जब कहो स्टाप तो स्टाप हो जाए, जब कहो चालू तो चालू हो जाए। एक सेकण्ड में ब्राह्मण अवस्था, एक सेकण्ड में फरिश्ता, एक सेकण्ड में देवता। तो जब जैसा संकल्प करो वैसे उस सफलता को प्राप्त कर सको, अभी यह अटेन्शन देना है। बाबा ने कहा कई बच्चे अभी कोशिश करते हैं कि हम इस स्वरूप में स्थित रहें लेकिन थोड़ी मेहनत के बाद स्थित हो पाते हैं। लेकिन अचानक पेपर में इतना टाइम नहीं मिलेगा उसके लिए सेकण्ड में मन को जहाँ स्थित करना चाहें वहाँ स्थित हो जाए। इसीलिए गीता में कहा है मनमनाभव, तनमनाभव वा धनमनाभव नहीं कहा है। तो चेक करो कि मन अपने कन्ट्रोल में है? कर्मयोग माना कर्म भी करना है और योग की स्थिति में भी स्थित होना है, तो कर्मयोग करते चेक करो कि मैं अपने करावनहार स्टेज पर स्थित होके कर्म कर रही हूँ? कर्म करनहार है और मैं करावनहार हूँ, तो पहले इस सीट पर सेट रहो कि मैं आलमाइटी अथॉरिटी हूँ। इसी सीट पर सेट होकर आर्डर करो तो मन आर्डर मानेगा।

फिर बाबा ने कहा कि जब बच्चों के सामने कोई विघ्न आता है, उस समय शक्ति का आह्वान करते हैं, तो कभी-कभी वह बात पूरी हो जाती है, शक्ति पीछे आती है। जिस शक्ति का जिस समय आह्वान करते हैं उस समय वह नहीं आती, बाद में आती है, लेकिन शक्ति ऑर्डर में तब चलेगी जब पहले आप अपनी सीट पर सेट हो।

बाबा अभी एक तो हमारा चेहरा सदा मुस्कराता हुआ देखना चाहता है, भले बातें तो आती हैं। बाबा कहते हैं 'बात' और 'बाप' यह दो शब्द याद रखो। आपका बाप से प्यार है ना लेकिन जब बात आती तो बातों में ही उलझ जाते हो, तो जब बातों से प्यार हो जाता है उस समय बाप कहाँ जाता है? अगर बात दिल में समा देते हो तो बाप निकल जाता है क्योंकि बाप गंदगी में तो बैठेगा ही नहीं। फिर बाप मदद कैसे करेगा? इसलिए बात को मन में नहीं समाओ, बातें आयेंगी लेकिन मन में समाना और बात को समझना फर्क है। बात को समझो भले, लेकिन समाओ नहीं। अगर बातों को दिल में समा दिया तो बाप को विदाई दे दी। तो अभी यह अटेन्शन रखना है, कभी कभी शब्द खत्म हो जाए। कोई-कोई बच्चे बहुत चतुराई से जवाब देते हैं - बाबा आपकी याद में रहते तो हैं लेकिन कभी कभी... तो कभी कभी कहने वाले विनाश के समय मानो कभी कभी हो गया तो क्या रिजल्ट होगी? इसलिए बाबा यही चाहता है कि कभी-कभी शब्द को खत्म करो, अभी-अभी सोचा और हुआ और जब भी कोई बात आवे तो बाबा को दिल से कहो 'आओ, मेरे प्यारे साथी आओ' मेरे को मदद करो, तो बाबा आ जायेगा। बाबा ने कहा भी है कि मैं बच्चों के दिल में रहता हूँ लेकिन वह दिल साफ और सच्ची हो। बाबा है दिलाराम माना दिल को आराम देने वाला। तो वो कहाँ जायेगा? मेरे दिल में ही तो आयेगा। लेकिन कोई न कोई विघ्न पेपर बनकर जरूर आयेंगे क्योंकि बिना पेपर कोई भी पास नहीं हो सकता है। जो पढ़ाई में अच्छा होगा वो कहेगा कल ही पेपर हो जाये, तो मैं पास होके अगले क्लास में जाऊं। और जो पढ़ाई में कच्चा होगा वो कहेगा परीक्षा की तारीख टल जाये तो अच्छा है। तो आप सभी ऐसे टालने वाले हो या एवररेडी हो? बाबा को एवररेडी ही पसंद है।

बाबा आजकल मन के ऊपर अटेन्शन दिला रहा है, मन को बिजी रखो इसके लिए बाबा कहते हैं मन्सा सेवा करो। कर्म करते हुए भी आप मन्सा सेवा कर सकते हो क्योंकि मुख्य बात है मनमनाभव। तो मन को याद और सेवा में बिजी रखो क्योंकि सबको सन्देश तो देना है ना। उनको भी लगे कि यह हमारे हैं। सबको मुक्ति तो मिलनी ही है लेकिन मुक्ति भी बाबा हमारे द्वारा ही दिलायेंगे ना। तो यह वर्सा सभी को दिलाओ, नहीं तो उल्हना मिलेगा। विनाश की डेट का नहीं सोचो। सन्देश देते रहो नहीं तो कहेंगे कि आपने हमारे को बहुत धोखा दिया जो हमको ऐसे टाइम पर बताया है जो हम कुछ भी कर नहीं सकते सिवाए अहो प्रभु आपकी लीला अपरम्पार... कहने के। इसीलिए बाबा कहते हैं अभी जल्दी-जल्दी मुक्ति का भी वर्सा दिलाओ, कोई रह नहीं जाये। तो सभी अपने-अपने कलासेज़ में यह अटेन्शन रखो और अपने ऊपर भी अटेन्शन रखो। तो बाबा ने सबको यादप्यार भी दिया और कहा कि इस यादप्यार का रेसपान्ड देना अर्थात् बाबा जो चाहता है वह करके दिखाना। बाबा अब यही चाहता है कि हरेक बच्चा बेफिकर रहे। बाबा के दिलतख्तनशीन आत्मा हूँ, इस नशे में रहे। अच्छा - ओम् शान्ति।